पाठ- 1 साखियाँ (दोहे)

रचयिता - कबीर दास

पद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर

① मानसरोवर सुभर जल, हंसा केलि कराहिं।
मुकताफल मुकता चुगैं, अब उड़ि अनत न जाहिं॥

(क) 'मानसरोवर' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर मानसरोवर के दो अर्थ हैं—
① पवित्र सरोवर, जिसमें हंस विहार करते हैं।
② मन अर्थात हृदय।

(ख) 'हंस' का क्या अर्थ बताया गया है?

उत्तर साखी में 'हंस' का अर्थ जीवात्मा से है।

(ग) 'मुक्ताफल मुक्ता चुगैं' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर 'मुक्ताफल मुक्ता चुगैं' से कवि का आशय है कि जीवात्मा रूपी हंस मोक्ष रूपी मोतियों को खाकर आनंदित हो उठती है।

(घ) 'सुभर जल' के दो अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 'सुभर जल' के दो अर्थ निम्न हैं -
① भरपूर जल।
② पवित्र अर्थात स्वच्छ जल।

ङ. प्रस्तुत दोहे का शिल्प सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर शिल्प सौंदर्य — ① उदाहरणों के माध्यम से इसका वर्णन किया गया है।

Scanned by CamScanner

② मन में (हृदय में) जीवात्मा के संबंधों पर प्रकाश डाला गया है।

③ अलंकार - 'मानसरोवर' और 'हंस' में रूपक अलंकार का प्रयोग किया गया है।

भाषा - सधुक्कड़ी भाषा (पंचमेल खिचड़ी) का प्रयोग किया गया है।

रस — भक्ति रस

काल — भक्ति काल

छंद — दोहा

② प्रेमी ढूँढत मैं फिरौं, प्रेमी मिले न कोइ।
प्रेमी को प्रेमी मिलै, सब विष अमृत होइ॥

(क) कवि का ईश्वर प्रेमी से क्या तात्पर्य है?

उत्तर कवि का ईश्वर प्रेमी से तात्पर्य है कि वह ईश्वर का भक्त जिसके अंदर विषय वासना, राग-द्वेष, लोभ-मोह, अहंकार जैसे विकार नहीं होते।

(ख) दोहे में 'मैं' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- 'मैं' शब्द का प्रयोग किसी सच्चे प्रभु प्रेमी के लिए किया गया है।

(ग) 'विष' और 'अमृत' किसके प्रतीक हैं?

उत्तर 'विष' हमारी वासनाओं दुर्भावनाओं और पापों का प्रतीक है और 'अमृत' भक्ति मुक्ति आनंद, पुण्य और सद्भावना का प्रतीक है।

Scanned by CamScanner

(a) 'विष' किस प्रकार 'अमृत' बन जाता है?

उत्तर जब दो हृदयों की सत्संगति से पाप नष्ट हो जाते हैं और पुण्य का उदय होता है तब विष अमृत बन जाता है।

(b) इस दोहे में कैसे प्रेम की चर्चा की गई है?

उत्तर इस दोहे में प्रभु-प्रेम की चर्चा की गई है।

(c) दो सच्चे प्रेमियों के मिलन पर कैसी अनुभूति होती है?

उत्तर दो सच्चे प्रेमियों अर्थात सच्चे ईश्वर भक्तों के मिलने से सब पाप नष्ट हो जाते हैं। सांसारिकता और आडंबर की भावना खत्म हो जाती है। मन में अच्छी भावनाओं का उदय होता है जो संसार के कल्याण हेतु उपयोगी होते हैं।

(3) हस्ती चढ़िए ज्ञान को, सहज दुलीचा डारि।
श्वान रूप संसार है, भूँकन दे झख मारि॥

(a) 'हाथी' और 'दुलीचा' का प्रतीकात्मक अर्थ क्या है?

उत्तर 'हाथी' का अर्थ ज्ञान से है और 'दुलीचा' का अर्थ समाधि अर्थात ध्यान से है।

(b) समाज और ज्ञान की तुलना किससे की गई है?

उत्तर समाज की तुलना कुत्ते से और ज्ञान की तुलना हाथी से की गई है।

(c) श्वान रूपी संसार से क्या तात्पर्य है?

उत्तर श्वान रूपी संसार से आशय उन आलोचकों से है

जो मनुष्य के नए कार्यों को देखकर उस व्यक्ति की निंदा करने से नहीं चूके जिससे अपने पथ पर आगे बढ़ने वाला व्यक्ति अपनी निंदा सुनकर विचलित हो जाए और उद्देश्य से भटक जाए।

(घ) 'ज्ञान' की तुलना हाथी से क्यों की गई है?

उत्तर हाथी शक्तिशाली जानवर होता है। अत: ज्ञान को हाथी कहने का आशय ज्ञानी व्यक्ति से है जो किसी से घबराता नहीं है।

(4) पखापखी के कारनै, सब जग रहा भुलान।
निरपख होइ के हरि भजै, सोई संत सुजान॥

(क) पखापखी का आशय स्पष्ट कीजिए?

उत्तर 'पखापखी' का आशय है – पक्ष-विपक्ष।

(ख) मनुष्य किस विवाद में पड़कर किसे भूल जाता है?

उत्तर- मनुष्य धार्मिक आडंबरों में फँसे होने के कारण ईश्वर को समझ नहीं पाता और महत्व को भूल जाता है।

(ग) सच्चा संत कौन है?

उत्तर सच्चा संत वही है जो निष्पक्ष भाव से ईश्वर की आराधना करता है अर्थात जो धार्मिक कर्मकांड या भेदभाव में नहीं उलझता है।

(5) हिंदू मुआ राम कहि, मुसलमान खुदाइ।
कहै कबीर सो जीवता, जो दुहुँ के निकटि न जाइ॥

(क) कबीर दास जी ने हिंदू और मुसलमानों को मरा हुआ क्यों कहा है?

उत्तर कबीर ने हिंदू और मुसलमान दोनों को मरा हुआ इसलिए कहा है क्योंकि वे आपसी भेदभाव में पड़कर ईश्वर को भूल जाते हैं। हिंदू की मृत्यु राम-राम कहते हुए और मुसलमान की मृत्यु खुदा-खुदा कहते हुए होती है।

(ख) 'जीवता' शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है?

उत्तर 'जीवता' शब्द का प्रयोग उन लोगों के लिए किया गया है जो सांप्रदायिकता से दूर रहते हैं।

(ग) 'मुआ' शब्द विशेषण है इसका विरोधी विशेषण शब्द अर्थात विलोम शब्द बनाइए?

उत्तर- 'मुआ' विशेषण का विरोधी अर्थात विलोम 'जीवता' होगा।

(6) काबा फिरि कासी भया, रामहिं भया रहीम।
मोट चून मैदा भया, बैठि कबीरा जीम॥

प्रश्न(क) किन लोगों की नज़र में काबा-काशी भेदभाव है?

उत्तर जो लोग धार्मिक कर्मकांडों में फंसे होने के कारण तीर्थ स्थलों का भ्रमण करते हुए अपना जीवन व्यर्थ व्यतीत कर देते हैं और ईश्वर की मूल सच्चाई से वंचित रह जाते हैं।

(ख) मोट चून मैदा भया का क्या अर्थ है?

उत्तर जिस प्रकार मोटा अनाज अर्थात गेहूं को पीसकर आटा और आटे को पीसकर मैदा बनाते हैं

मानसरोवर सुभर जल, हंसा केलि कराहिं।
मुकताफल मुकता चुगैं, अब उड़ि अनत न जाहिं।।1।

प्रेमी ढूँढ़त मैं फिरौं, प्रेमी मिले न कोइ।
प्रेमी कौं प्रेमी मिलै, सब विष अमृत होइ।2।

हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि।
स्वान रूप संसार है, भूँकन दे झख मारि।3।

पखापखी के कारनै, सब जग रहा भुलान।
निरपख होइ के हरि भजै, सोई संत सुजान।4।

हिंदू मूआ राम कहि, मुसलमान खुदाइ।
कहै कबीर सो जीवता, जो दुहुँ के निकटि न जाइ।5।

काबा फिरि कासी भया, रामहिं भया रहीम।
मोट चून मैदा भया, बैठि कबीरा जीम।6।

ऊँचे कुल का जनमिया, जे करनी ऊँच न होइ।
सुबरन कलस सुरा भरा, साधू निंदा सोइ।7।

Scanned by CamScanner

सबद (पद)

1

मोकों कहाँ ढूँढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में।
ना तो कौने क्रिया–कर्म में, नहीं योग बैराग में।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पल भर की तालास में।
कहैं कबीर सुनो भई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में।।

2

संतौं भाई आई ग्याँन की आँधी रे।
भ्रम की टाटी सबै उड़ाँनी, माया रहै न बाँधी।।
हिति चित्त की द्वै थूँनी गिराँनी, मोह बलिंडा तूटा।
[illegible] छाँनि परि घर ऊपरि, कुबधि का भाँडाँ फूटा।।
[illegible] करि संतौं बाँधी, निरचू चुवै न पाँणी।
[illegible] काया का निकस्या, हरि की गति जब जाँणी।।
[illegible] जो जल बूठा, प्रेम हरि जन भींनाँ।
[illegible]

Scanned by CamScanner